अप्रत्यक्ष होनेवाली संस्कृति और खेती

केरल हमारा राज्य हैं। इस राज्य का शान उठाना हमारा दायित्व हैं। भारत के अनेक राज्यों मे से एक होने के अवसर में भी केरल अनोखी हैं। अन्य राज्यों के अलावा केरल के संस्कार और प्रकृति विशिष्ट होती हैं। इस राज्य में जीना हमारे लिए एक खास बात हैं। केरल को क्या खास करता हैं? इनकी संस्कृति का आधार क्या हैं? हम सब ये सच पहचानना चाहिए की हमारी खेती और कर्षक सिर्फ हमारे लिए ही नहीं बल्कि पूरा देश केलिए एक अनमोल खजाना जैसा ही हैं। इस खजाने का मूल्य हम कभी नहीं भूलना चाहिए। इसी खेती को उठाकर हमारी संस्कृति को भी हम उठाना चाहिए।

कई साल पेहले हमारी नाना-नानी के बचपन में केरल ऐसा थी अनोखी थी। विश्व में भारत के शान उठाने वाली एक विशिष्ट स्थान केरल को हुआ था। खेती, कर्षक, अनमोल प्रकृति, मौसम, और आम जनता। सच में वो ईश्वर का देश था। कुछ खास था।

उस समय की प्रकृति, समाज सब विभिन्न होती है। आज हम देखने वाली स्थिति उसी समय केरल में नहीं था। इस व्यत्यास का प्रधान कारण आम जनता की उसी समय का जिंदगी ही है। अब हमें क्या चाहिए वो हमारे हाथ में है। लेकिन उसी समय मनुष्य प्रगति के पीछे नहीं दौड़ा। वो प्रकृति का आस्वादन करके आगे बढ़ा। इसकी बड़ी असर उस समय की खेती में हुआ। खेती माने सिर्फ फल सब्जियाँ आदि से संबधित नहीं है। बल्कि हमारी हम मनुष्य जीवन से संबधित थी। खेती से मिलने वाले फल जनता की परिश्रम का भी फल होती है। उसी समय सभी लोग खेती से अपने जीवन बिताने वाले लोग थे। वे कभी भी खेती को बुरा नहीं माना। ~~का~~ बल्कि हमारी जीवन का ज़िंदगी का एक अंग माना। इसी से ही प्रकृति और मनुष्य के बीच में एक एक अच्छी तरह की दोस्ती बन चुकी थी। और इसी दोस्ती के कारण ही हमारी नाना-नानी उनका जीवन को अमूल्य मानते हैं।

हम कहते हैं की हमारी जिंदगी अनमोल है। क्योंकि हमें अब अच्छे तरह के सौकर्य मिलते हैं। हमारे जीवन हम सबको कुछ देती हैं। लेकिन हम ये सच्ची बात मान लेना हैं कि हमारी नष्ट हुई संस्कृति और खेती सबके ऊपर है।

सालों पहले मनुष्य प्रकृति से आश्रय प्राप्त करती थी। उसी समय हमारे पास कोई नई टेक्नोलजी पानी की नयी-नयी सौकर्य नहीं थी। लेकिन इस कार्य से समाज और मनुष्य के अच्छे संबंध हो चुके हैं। हमारी संस्कृति उसी समय बढ़ते रहा।

खेती और संस्कृति कैसे संबंधित होती है? ये चिंता हम सबके मन में होती हैं क्योंकि हम खेती को खास नहीं मानती। खेती से जुड़ी एक साथ रहना और सामाजिक प्रगति हम कहाँ देख सकते हो? हमारी राज्य केरल में ही ये अनोखी दृश्य हम देख पाती है। बहुत पिछले हमारे राज्य गरीब ही थी। लेकिन भूखमरे लोगों कमी थी। और सामाजिक सेवा बड़ी थी। हम ये बात कई महान व्यक्तियों की जिंदगी से बना

सकती हैं। वे अब बड़े होकर अपनी बचपन को अमूल्य ही मानते हैं। प्रकृति और उनकी जीवन केरल की संस्कृति की ओर इशारा करता हैं। खेती करनेवाली कर्षक कभी भी उनके मन में एक दृश्य जैसा एक सपना जैसा आती हैं। किसान की परिश्रम और मेहनत ही हमारी खाना हैं खाना की आधार हैं। ये सच्च वे लोग मान ली थी। प्रसिद्ध कवि और चिंतक भी हमसे ये कहा हैं। ए. डी वासुदेवन नायर केरल में जीनेवाली एक कवि हैं। हमारी संस्कृति का बड़ा असर उनके जीवन में हुआ था। वे वे अपने बचपन बहुत ज्यादा कुरितों को सामना करा था। लेकिन अब वे जैसी बातों को मीठी याद दिलाती हैं। वे कहा हैं कि मनुष्य अब पैसा और इससे जुड़े सुख को आनंद कहते हैं। लेकिन सच में हमारी खेती और संस्कृति ही हमारी जीवन में अनमोल होती हैं। इनके बिना जीवन अपूर्ण होती हैं। हमारी संस्कृति हमारी राज्य की आस्त

और श्रेष्ठ प्रकृति की ओर इशारा करती हैं। वह खेती हैं। हमारी आदत खेती से जुड़े जिंदगी हैं।

लेकिन अब हमारे जीवन व्यत्यस्त बन गया हैं। हम हमारी संस्कृति को छोड़कर हमारी प्रकृति को छोड़कर एक बुरा मनोभाव के साथ जीते हैं। ~~वे~~ अब भी इस मनोभाव का बुरा असर समझने को हम जैसे युव पीढ़ी तय्यार नहीं होती। वे प्रगति के पीछे दौड़ते हैं। ~~अबी~~ सभी जीवजाल को मारकर वो मनुष्य की ही विश्व का संकल्प कर रहा हैं।

खेती और किसान इनके लिए गैर जरूरी बन गये हैं। खाने के लिए कुछ देने वालों में ईश्वर हैं। दुनिया की भूख को समझकर मेहनत करनेवाली किसान ईश्वर नहीं प्रपंच हैं। अब हम किसानों की ~~तरह~~ और बुरा व्यवहार अपनाती हैं। ~~इनकी~~ मेहनत को हम नहीं समझते। अब के बच्चें और युव पीढ़ी को खेती करना पसंद हैं? वे टेक्नोलजी के पीछे हैं।

इसी दौड़ के असर था 'प्रगति'। सबको मारने वाली प्रगति। इसी से कोई भी व्यक्ति को जीना संभव नहीं होती। सिर्फ प्रकृति से जुड़े प्रकृति ही मूल्यवान और अच्छे बनते हैं। हमारी ~~संस~~ संस्कृति और खेती का संबंध पहचान लिया। फिर भी खेती को हम छोड़ देते हैं।

हमें खेती को छोड़ने का मनोभाव क्यों आया है? क्योंकि हम हमारे संस्कृति को मूल्यवान नहीं समझते। हम अन्य देशों को अच्छे मानते हैं। ~~हम खेती करने~~ अब समूह माध्यमों का बड़ा असर हम बच्चों और युव पीढ़ी में हुआ। वो मोबाइल फोन आदि के बिना जीना नहीं सकता। लेकिन इस मनोभाव से हमें गुण के साथ बहुत सारा दोष भी हुआ। खाना मिलने केलिए पैसा चाहिए। सिर्फ पैसा। ये मनोभाव भी अब की जनता में प्रकट होती है। अन्यदेशों को अनोखी मानकर अपने देश की और केरल की संस्कृति को अवकी जनता ~~मूल्य~~ उपेक्षा की दृष्टि में देखते हैं।

कोरिया, चैना, जपान आदि देशों की संस्कृति बड़ा समझकर कई लोग पढ़ने केलिए यु के और कानडा आदि देशों में जाते हैं। वहाँ की नाचना, घूमना, चड़ना आदि ही हमारी जनता मूल्यवान समझती ही। इसके कारण ही हमारी संस्कृति नष्ट होने लगा। अन्य देशों के कपड़े, उनके जिंदगी ये सब खेती के नष्ट और किसानों की नष्ट की कारण बनी। इतने सारे नष्ट हमारे जीवन में अब हुआ हैं। शायद अब हम ये बात मान लेंगे की कई साल पहले हमारी नाना-नानी की जीवन ही श्रेष्ठ था।

नष्टों के साथ खेती के साथ एक अच्छा मनोभाव कुछ साल पहले हमें मिला था। जब हम घर में ही था। कोरोणा की फैलने का समय। कोरोणा हमारे जीवन में बहुत कुछ बुरा कार्य कर लिया। हम अलसता के साथ एक-दो साल घर में बैठा। परंतु घर बैठके-बैठके हमारे मन कुछ सत्य बात

को पहचानने लगा। हमारे खेती के बारे में समझकर कई परिवार अपनी घर की टेरेस में खेती की शुरुआत की। कई महान व्यक्ति और सामूहिक प्रगति की आशा करनेवालों ने ऐसा किया तो बीं कोम पढ़ गये लोग और पढ़ा-लिखा युव पीढ़ी भी खेती की ओर आया। इस तरह बुरा अनुभव के साथ कुछ नये और अच्छे बात पढ़ाकर कोरोणा चल गई।

अब भी कोरोणा के बाद भी हमारे मनोभाव में ~~ज्यादा~~ कोई व्यत्यास नहीं प्रकट हैं। कि एक प्रश्न खतम हो गया तो हम सब भूल गया। लेकिन अब याद दिलाने के समय हैं। हमारी केरल की संस्कृति खेती और अब बनी गई उनकी शोषण। सभी बात को हम जानना चाहिए। हमारे राज्य ही श्रेष्ठ हैं। हमारे खेती ही श्रेष्ठ हैं। हमारे किसान ही महान हैं। दुनिया की प्रगति के पीछे वे हैं हम ये बात नहीं भूलना चाहिए। अन्य देश और हमारी केरल में कुछ बहुत बड़ी

62 nd Kerala School Kalolsavam, January 4 to 8, 2024, Kollam

Item Code: 645 Participant Code: 104

व्यत्यास हैं। हमारी केरल ही श्रेष्ठ बन जाती हैं। 'हमारी' और 'अन्य' कभी भी व्यत्यस्त होती हैं। अपनी आदत छोड़के दूसरों की आदत के साथ जीना कभी अच्छी नहीं होती। प्रगति के साथ जीने का प्रश्न भी पै है। हम सदा दूसरे देशों की प्रगति को महत्व करेंगी। लेकिन हमारी संस्कृति और शैली को छोड़ना हमें छोड़ने जैसा ही हैं। ये बात हम कई व्यक्ति के जीवन में देख सकते हैं। अन्य देशों को खास समझकर हम वहाँ काम करने लगते हैं। लेकिन वहाँ दुरितपूर्ण जिंदगी अपनाती हैं।

एक बार एक बच्चें ने ज्ञानी से जीवन में खुशी रहने का रहस्य पूछा। ज्ञानी ~~उनसे~~ उनसे कहा कि 'तुम्हारी संस्कृति और तुम्हारी राज्य ही खुशी रहने का रहस्य हैं'। हम नये चीजों के पीछे दौड़ने से पहले हमारे पास क्या हैं उन्हें हम समझना हैं। हमारी संस्कृती हमारी शैली हमारी आदत और हम ही कई जगह में श्रेष्ठ बन जाती हैं।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

जीना हैं तो हमारी जगह पर जीना हैं। खुशी रहना सुखी रहना सब इसी जगह में ही होनी हैं। यहाँ हमारी जन्मस्थान हैं। इनि दुनियाभर की सभी कार्य को हम आस्वादन कर सकते हैं। मज़ा ले सकते हैं। परंतु उसी समय हमारे हाथ में क्या हैं उनकी रखवाली करना हैं। केरल की संस्कृति खेती और किसान हैं। हमारी राज्य का धान भी वहीं हैं। इसलिए हमें इसी धान को खाना हैं। हमारे हाथ के चीज़ अब खेती और उनसे जुड़े प्रगती हैं। हाथ के इस अनमोल खज़ाने को साथ लेती ही हम कोई और खज़ाने के पीछे चलना हैं। चली गई खेती की जो अच्छे समय को अप्रत्यक्ष होने लगे संस्कृति को नष्ट होनेवाले प्रकृति वैसे साथ की दोस्ती को हम हमारे तरफ़ बुलाना हैं। प्रकृति से जुड़े इक केरल को, हम सपना नहीं सत्य बनाना चाहिए .....